साधकों का
मासिक प्रेरणा पत्र

वार्षिक शुल्क रु. 30/-
आजीवन शुल्क रु. 500/-

बुद्धवर्ष 2556, भाद्रपद पूर्णिमा, 30 सितंबर, 2012 वर्ष 42 अंक 4

For Patrika in various languages, visit: http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

अत्तना हि कतं पापं, अत्तना संकिलिस्सति।
अत्तना अकतं पापं, अत्तनाव विसुज्झति।
सुद्धी असुद्धि पच्चत्तं, नाञ्ञो अञ्ञं विसोधये॥

धम्मपद- १६५, अत्तवग्गो

अपने द्वारा किया गया पाप ही अपने को मैला करता है।
स्वयं पाप न करे तो आदमी आप ही विशुद्ध बना रहे।
शुद्धि-अशुद्धि तो प्रत्येक मनुष्य की अपनी-अपनी ही है।
(अपने-अपने ही अच्छे-बुरे कर्मों के परिणामस्वरूप है।)
कोई दूसरा भला किसी दूसरे को कैसे शुद्ध कर सकता है?

मंगलमयी गृही आचार-संहिता

नमस्कार किसको करें?

राजगृह का श्रेष्ठीपुत्र सिगाल सुबह-सुबह उठ कर नगर के बाहर गया। भीगे वस्त्रों से और भीगे केश से पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर, नीचे और ऊपर छहों दिशाओं की ओर हाथ जोड़-जोड़ कर नमस्कार करने लगा। उन दिनों की अनेक पूजन-विधियों और कर्मकांडों में से यह भी एक था। उसी समय भगवान वेणुवन विहार से निकले और राजगृह नगर में भिक्षाटन के लिए चले। रास्ते में श्रेष्ठीपुत्र सिगाल को छहों दिशाओं की ओर नमस्कार करते हुए देखा तो पूछा -- "गृहपति-पुत्र! यह क्या कर रहे हो?''

सिगाल ने उत्तर दिया-- ''भंते भगवान! दिशाओं को नमस्कार कर रहा हूं। मेरे पिता ने मरते समय आदेश दिया था कि दिशाओं को नमस्कार अवश्य करना। इससे सुख-शांति मिलेगी। इसलिए पिता के अंतिम आदेश का पालन कर रहा हूं।''

भगवान ने कहा-- 'गृहपति-पुत्र! आर्यधर्म में इस प्रकार छहों दिशाओं को नमस्कार नहीं किया जाता।''

-- 'अच्छा हो भगवान, कृपया मुझे आर्यधर्म का ज्ञान करायें।' श्रेष्ठीपुत्र सिगाल की प्रार्थना पर भगवान ने उसे समझाया--

वास्तविक छह दिशाएं

भगवान ने श्रेष्ठीपुत्र सिगाल को आर्यधर्म में छह दिशाओं को नमस्कार करने की सही विधि सिखायी-समझायी। कोई व्यक्ति किस प्रकार छहों दिशाओं को धर्म से आच्छादित कर यानी धर्मपूर्वक जीवन जीकर इनके प्रति अपनी सुरक्षा स्थापित करता है।

छह दिशाएं क्या हैं?

माता-पिता को पूर्व दिशा, आचार्यों को दक्षिण दिशा, पुत्र-कलत्र को पश्चिम दिशा, मित्र-साथियों को उत्तर दिशा, नौकर-चाकरों को नीचे की दिशा और श्रमण-ब्राह्मणों को ऊपर की दिशा जाननी चाहिए।

१. माता-पिता की सेवा

पुत्र को पांच प्रकार से माता-पिता की सेवा करनी चाहिए। १. इन्होंने मेरा भरण-पोषण किया है, इसलिए मुझे इनका भरण-पोषण करना चाहिए। २. इन्होंने मेरे प्रति कर्तव्य पूरा किया है, मुझे भी इनके प्रति अपना कर्तव्य पूरा करना चाहिए। ३. इन्होंने कुल-वंश कायम रखा है, मुझे भी कुल-वंश कायम रखना चाहिए। ४. इन्होंने मुझे दाय (विरासत) दी है। मुझे भी उचित दाय उत्पन्न करना चाहिए। ५. मृत पितरों के पुण्यार्थ श्रद्धापूर्वक दान देना चाहिए। यों पांच प्रकार से पूजित माता-पिता पुत्र पर पांच प्रकार से अनुकंपा करके उसका भविष्य उज्ज्वल करते हैं। १. उसे पाप-कर्मों से बचाते हैं। २. उसे पुण्य-कर्मों में लगाते हैं। ३. उसे शिल्प सिखाते हैं। ४. योग्य जीवन-संगिनी से उसका संबंध कराते हैं। ५. समय पाकर उसे दायाद प्रदान करते हैं। यों पांच प्रकार से सेवित हो पूर्व दिशा रूपी माता-पिता पुत्र पर पांच प्रकार से अनुकंपा करते हैं। इस प्रकार पूर्व दिशा गृही के लिए योगक्षेमपूर्ण होती है।

२. आचार्यों की सेवा

शिष्य को पांच प्रकार से आचार्य की सेवा करनी चाहिए। १. आचार्य से पहले तत्परतापूर्वक उठ कर, २. आवश्यकता के समय उपस्थित रह कर, ३. सेवा-सुश्रूषा करके, ४. सत्संग करके, ५. सत्कारपूर्वक विद्या सीखता है। यों पांच प्रकार से सेवित आचार्य शिष्य पर पांच प्रकार से अनुकंपा करते हैं। १. उसे सुविनीत बनाते हैं, २. उसे भली प्रकार सुशिक्षा ग्रहण करना सिखाते हैं। ३. विद्या शिल्प लुप्त न हो, इस योग्य पात्र द्वारा कायम रहे, इस उद्देश्य से उसे अच्छी प्रकार सिखाते हैं। ४. संगी-साथियों में उसकी प्रशंसा कर उसे प्रोत्साहन देते हैं। ५. हर दिशा में सुरक्षित रह सकने के अनुकूल उसे प्रशिक्षित करते हैं। उपरोक्त पांच प्रकार से शिष्य द्वारा सेवित हो दक्षिण दिशा रूपी आचार्य उस पर पांच प्रकार से अनुकंपा करते हैं। इस प्रकार दक्षिण दिशा उसके लिए योगक्षेमपूर्ण होती है।

३. पत्नी की सेवा

पति को पांच प्रकार से पत्नी की सेवा करनी चाहिए। १. उसका सम्मान करके, २. उसे अपमानित न करके, ३. व्यभिचार न करके, ४. उसे ऐश्वर्य-प्रभुत्व प्रदान करके,

५. उसे अलंकार-आभूषण से सज्जित करके। इस प्रकार सेवित पत्नी पांच प्रकार से पति पर अनुकंपा करती है। १. गृह-संचालन के कर्तव्य भली प्रकार पूरे करती है, २. स्वजन-परिजन, नौकर-चाकरों को भली प्रकार प्रसन्न-संतुष्ट रखती है। ३. व्यभिचारिणी नहीं होती। ४. पति द्वारा अर्जित धन की सुरक्षा करती है। ५. सभी घरेलू कामों में निरालस और दक्ष होती है। यों पांच प्रकार से पति द्वारा सेवित होने पर पश्चिम दिशा रूपी पत्नी पति पर पांच प्रकार से अनुकंपा करती है और यों पश्चिम दिशा उसके लिए योगक्षेमपूर्ण होती है।

४. मित्र की सेवा

पांच प्रकार से मित्र की सेवा करनी चाहिए। १. उसे दे कर, २. प्रिय वचन बोल कर, ३. भलाई कर के, ४. समानता का भाव प्रकट करके, ५. वचन पालन द्वारा विश्वास उत्पन्न करके। यों पांच प्रकार से सेवित हो मित्र बदले में कुलपुत्र पर पांच प्रकार से अनुकंपा करते हैं। १. प्रमादी हो जाय तो उसकी सुरक्षा करते हैं, २. प्रमत्त होने पर उसके धन की रक्षा करते हैं, ३. संकट के समय उसे शरण देते हैं, ४. विपत्ति में उसका साथ देते हैं, ५. उसके परिवार के अन्य लोगों का भी आदर करते हैं। यों पांच प्रकार से सेवित होने पर उत्तर दिशा रूपी मित्र बदले में उस पर पांच प्रकार से अनुकंपा करते हैं। इस प्रकार उत्तर दिशा उसके लिए योगक्षेमपूर्ण होती है।

५. नौकर की सेवा

पांच प्रकार से मालिक को नौकर-चाकर की सेवा करनी चाहिए। १. उसे शक्ति के अनुकूल काम देकर, २. उसे भोजन वेतन देकर, ३. रोगी हो जाय तो उसकी सुश्रूषा करके, ४. उत्तम सरस भोजन में उसे साथी बना कर, ५. उसे समय पर छुट्टी देकर। पांच प्रकार से सेवित हो कर सेवक मालिक पर पांच प्रकार से अनुकंपा करते हैं। १. मालिक से पहले उठ कर आवश्यकता के समय उपस्थित रहते हैं, २. पीछे सोने वाले होते हैं, ३. चोरी नहीं करते, दिया हुआ ही लेते हैं, ४. कामों को अच्छी प्रकार करने वाले होते हैं, ५. यश-कीर्ति फैलाने वाले होते हैं। यों पांच प्रकार से सेवित हो निचली दिशा रूपी नौकर-चाकर मालिक पर पांच प्रकार से अनुकंपा करते हैं। इस प्रकार निचली दिशा उसके लिए योगक्षेमपूर्ण होती है।

६. श्रमण-ब्राह्मण की सेवा

कुल-पुत्र को पांच प्रकार से श्रमण-ब्राह्मण की सेवा करनी चाहिए। १. मैत्रीभावपूर्ण शारीरिक कर्म से, २. मैत्रीभावपूर्ण वाचिक कर्म से, ३. मैत्रीभावपूर्ण मानसिक कर्म से, ४. खुले दिल से अगवानी करके, ५. लोकीय आवश्यकताओं की पूर्ति करके। पांच प्रकार से सेवित होने पर श्रमण-ब्राह्मण छह प्रकार से कुल-पुत्रों पर अनुकंपा करते हैं। १. पाप कर्मों से बचाते हैं, २. कुशल कर्मों में लगाते हैं, ३. कल्याण चाहते हुए अनुकंपा करते हैं, ४. अश्रुत धर्म सुनाते हैं, ५. श्रुत धर्म का शोधन कर पुष्ट करते हैं, ६. सद्गति का मार्ग बताते हैं। यों पांच प्रकार से सेवित होने पर ऊपरी दिशा रूपी श्रमण-ब्राह्मण संत सद्गृहस्थ पर छह प्रकार से अनुकंपा करते हैं। इस प्रकार ऊपरी दिशा उसके लिए योगक्षेमपूर्ण होती है।

कोई सद्गृहस्थ सद्धर्म की इस आचार-संहिता को धारण कर, छहों दिशाओं से सुरक्षित और भयमुक्त होता है।

भगवान का यह उपदेश सुन कर श्रेष्ठीपुत्र सिगाल निहाल हुआ। परंपरा से जड़ीभूत हुई निष्प्राण रूढ़ियों से मुक्ति पाकर सद्धर्म के जीवंत व्यवहार-पथ पर चल कर अपना इहलोक और परलोक दोनों सुधार सका।

श्रेष्ठीपुत्र सिगाल की प्रार्थना पर उस समय भगवान ने जो उपदेश दिये वे केवल सिगाल के लिए ही नहीं, बल्कि सभी गृहस्थों के लिए अत्यंत कल्याणकारी हैं। गृहस्थों के लिए यह आचार-संहिता शुद्ध आर्यधर्म की भांति सार्वजनीन है, सार्वदेशिक है, सार्वकालिक है। आज के किसी भी सद्गृहस्थ के लिए उतनी ही उपादेय है, जितनी कि २६०० वर्ष पूर्व सिगाल के लिए थी।

एक अन्य प्रचलित कर्मकांड-- नदी-स्नान

नदी-स्नान से सारे पाप धुल जाते हैं। भगवान के पास बैठे सुंदरिक भारद्वाज ब्राह्मण ने जब भगवान से यह कहा – "क्या आप गौतम! स्नान के लिए बाहुका नदी चलेंगे?"

"ब्राह्मण! बाहुका नदी से क्या लेना है? बाहुका नदी क्या करेगी?"

"हे गौतम! बाहुका नदी लोकमान्य है, बहुत जनों द्वारा पवित्र मानी जाती है। बहुत से लोग बहुका नदी में अपने किये पापों को बहाते हैं।"

तब भगवान ने सुंदरिक भारद्वाज ब्राह्मण से कहा – "बाहुका, गया और सुंदरिका में; सरस्वती, प्रयाग तथा बाहुमती नदी में; काले कर्मों वाला मूढ़ व्यक्ति चाहे नित्य नहाये, किंतु शुद्ध नहीं हो सकता। क्या करेगी सुंदरिका, क्या बाहुलिका नदी और क्या प्रयाग? वे पापकर्मी दुष्ट व्यक्ति को शुद्ध नहीं कर सकते। शुद्ध कर्म करने वालों के लिये सदा ही फल्गु है। शुद्ध कर्म करने वालों के व्रत सदा ही पूरे होते हैं। ब्राह्मण! शुद्ध कर्म करते हुए ही नहा! सारे प्राणियों का भला कर। जो व्यक्ति झूठ नहीं बोलता, किसी प्राणी की हत्या नहीं करता, बिना दिये कुछ नहीं लेता, जो श्रद्धावान मत्सर-रहित है, वह गया जाकर क्या करेगा? लघु जलाशय भी उसके लिये गया समान है।"

भगवान की यह कल्याणी शिक्षा उनके जीवनकाल में ही साधकों में प्रचलित हो गयी थी और सदियों तक संतों को प्रोत्साहित करती रही। तभी समाज में यह मुहावरा चल पड़ा –

जब मन चंगा, तो कठौती में गंगा।

दासी पूर्णा

पूर्णा प्रसिद्ध श्रेष्ठि अनाथपिंडिक की क्रीत दासी थी और भगवान बुद्ध की अनुयायी भी। कड़ाके की सर्दी में सुबह-सुबह पानी भरने के लिए उसे नदी में उतरना पड़ता था। एक दिन उसने देखा कि एक ब्राह्मण उस कड़ाके की सर्दी में नदी में उतर कर ठंडे पानी में डुबकियां लगा रहा है। पूछने पर उसने उत्तर दिया –

– इस स्नान से पूर्व में किये हुए सभी पाप-कर्म धुल जायेंगे।

इस पर पूर्णा दासी ने ब्राह्मण को समझाते हुए कहा –

– अरे, यह किसने कह दिया? यह तो किसी अज्ञानी द्वारा किसी अज्ञानी को दिया गया उपदेश है।

– यदि पानी के स्नान द्वारा किये गये सारे पाप-कर्म धुल जाते हैं और उनसे विमुक्ति मिल जाती है तब तो ये सारे मेंढक, कछुए, पानी के सांप, मछलियां और मगरमच्छ आदि जलचर निश्चित रूप से पापमुक्त होकर स्वर्गगामी हो जाते होंगे?

उसने आगे कहा– यदि नदी-स्नान से पाप-मुक्ति होती तो फिर भेड़-बकरी, सूअर और मुर्गे को मार कर उनका मांस बेचने वाले कसाई तथा मछुआरे, चोर, डाकू, लुटेरे और अन्य पापी लोग पाप-कर्म करके क्या नदी में स्नान करने से पापमुक्त हो जाते हैं?

यदि ऐसा मानें तो उन्हें पाप-कर्म करने का प्रोत्साहन ही मिलेगा।

यह सुन कर ब्राह्मण को होश आया और वह पाप-कर्मों से बच कर सन्मार्ग पर लग गया। भगवान की इस शिक्षा के संपर्क में जो आया उसने यह भली-भांति समझ लिया कि अपने पाप-कर्मों को धो डालने के लिए केवल एक ही रास्ता है और वह है कि काया, वाणी और चित्त से मौन रह कर विपश्यना साधना द्वारा अपने भीतर धर्म की गंगा में डुबकी लगाए।

इस प्रकार अपने भीतर की धर्मगंगा में डुबकी लगाने वाला व्यक्ति अपनी काया, वाणी और चित्त को नितांत शुद्ध कर लेता है और अपने सारे पापों को बहा देता है। यही अपने भीतर का सही धर्म-स्नान है। इसी से कोई भी व्यक्ति शुद्ध ब्राह्मण बनता है।

भगवान की इस शिक्षा को सुन-समझ कर और अभ्यास करके शुद्ध हुए ब्रह्मबंधु ने कहा-- 'अब तक तो मैं केवल नाम के लिए ब्राह्मण था, अब सही माने में पापमुक्त ब्राह्मण बन गया हूं।'

आओ, साधको! हम भी इन मिथ्या मान्यताओं को त्याग कर इसी प्रकार चित्त को शुद्ध करें, अपना इहलोक तथा परलोक सुधारें और सही माने में अपना मंगल साध लें, कल्याण साध लें!

कल्याण मित्र,
सत्यनारायण गोयन्का

विशेष वार्षिक कार्यक्रम और उनके संपर्क

आचार्य स्वयं शिविर - १८ नवंबर से ३ दिसंबर, २०१२ तक (*धम्मपत्तन, धम्मगिरि एवं धम्मतपोवन*) **ट्रस्टियों की कार्यशाला -** ३ दिसंबर से ४ दिसंबर, २०१२ तक (*धम्मगिरि*) **सहायक आचार्यों की कार्यशाला -** ३ दिसंबर से ६ दिसंबर, २०१२ तक (*धम्मतपोवन*) **सहायक आचार्यों का सम्मेलन -** ७ दिसंबर से ९ दिसंबर, २०१२ तक (*धम्मगिरि एवं धम्मतपोवन*)

१. केंद्र तथा क्षेत्र के सहायक आचार्य यह सुनिश्चित करें कि वे अपने क्षेत्र से २ या ३ कर्मठ ट्रस्टियों को धम्मगिरि में होने वाली **ट्रस्टियों की कार्यशाला** में भाग लेने के लिए अवश्य भेजें। ये **आचार्य स्वयं शिविर** में बैठ सकते हैं और २ दिवसीय कार्यशाला में भी भाग ले सकते हैं। नाम रजिस्ट्रेशन कराने हेतु कृपया इस पते पर ई-मेल करें– info@giri.dhamma.org

२. धम्मगिरि पर २४ अक्टूबर, २०१२ को होने वाली **सहायक आचार्यों की कार्यशाला** अब ३ से ६ दिसंबर, २०१२ को होगी। इस कार्यशाला में रजिस्ट्रेशन कराने के लिए पूरा विवरण इस पते पर ई-मेल करें– info@giri.dhamma.org

३. सहायक आचार्यों के सम्मेलन में रजिस्ट्रेशन कराने के लिए पूरा विवरण (नाम, उम्र और क्षेत्र) इस पते पर ई-मेल करें– atmeeting2012@gmail.com

ग्लोबल विपश्यना पगोडा हेतु कार्पस फंड

ग्लोबल पगोडा के निर्बाध संचालन हेतु एक कार्पस फंड एकत्र किया जा रहा है ताकि भविष्य में इसका रख-रखाव बिना किसी बाहरी दबाव के सफलतापूर्वक होता रहे और म्यंमा में सद्धर्म को सुरक्षित रखने तथा भारत वापस भेजने के लिए सयाजी ऊ बा खिन और म्यंमा के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन का यह **अद्‌भुत पावन प्रतीक** हजारों वर्षों तक कायम रहे। इस **कार्पस फंड** का उपयोग कोई भी व्यक्ति अपने व्यक्तिगत लाभ के लिए नहीं कर सकता, बल्कि सरकारी बैंक में जमा इस धन के ब्याज से पगोडा का दैनिक व्यय और रख-रखाव संबंधी कार्य पगोडा-संरक्षण के नियमानुसार होता रहेगा। दान भेजने हेतु विवरण इस प्रकार है:--

१. भारत में कोर बैंकिग के द्वारा **ग्लोबल विपश्यना फाउंडेशन** को दान भेजने के लिए भारत की किसी भी **बैंक ऑफ इंडिया** की शाखा से पैसे भेज सकते हैं। विवरण निम्न प्रकार है--

"Global Vipassana Foundation"
'Axis Bank India', A/C. NO: 911010032397802
SWIFT CODE: AXISINBB062,
IFSC CODE: UTIB0000062
MICR CODE: 400211011,
BRANCH: Malad west branch, Mumbai-400064.

२. भारत के बाहर से दान भेजने वालों के लिए विवरण निम्न प्रकार है-- **(SWIFT transfer to 'Bank of India')**
SWIFT Transfer details are as follows:
"Global Vipassana Foundation"
Name of the Bank : **"J P Morgan Chase Bank"**
Address : New York, US,
A/c. No. : 0011407376, Swift: CHASUS33.

चेक/ड्राफ्ट कृपया निम्न पते पर प्रेषित करें--

ग्लोबल विपश्यना फाउंडेशन, रजि. ऑफिस-- ग्रीन हाऊस, २रा माला, ग्रीन स्ट्रीट, फोर्ट, मुंबई- 400023. *फोन*- **022-22665926**.

ग्लोबल पगोडा में पालि पाठ्यक्रम - २०१३

विपश्यना विशोधन विन्यास, ग्लोबल पगोडा में अनिवासीय पाठ्यक्रम– पालि व्याकरण, सुत्त, सैद्धान्तिक विपश्यना इत्यादि। शिक्षण का माध्यम - पालि-अंग्रेजी, पालि-मराठी, पालि हिन्दी; **अवधि -** ०१-०२-२०१३ से ३०-९-२०१३ तक (८ मास, सप्ताह में एक बार, ११ से ५ बजे तक); **आवेदन पत्र प्राप्त करने का स्थल और तिथि -** V. R. I., ग्लोबल पगोडा में- १ से २० फरवरी तक; आवेदन पत्र जमा करने की अंतिम तिथि - २०-०१-२०१३.

आवासीय पाठ्यक्रम (परियत्ति और पटिपत्ति):--

३० दिवसीय प्रारंभिक पालि-मराठीः अवधि - ०१-०१-२०१३ से ३१-०१-२०१३ तक; **फार्म जमा करने की अंतिम तिथि -** ०१-१२-२०१२;

३० दिवसीय उच्चतर पालि-हिन्दी (V. R. I. इगतपुरी में प्रारंभिक पालि-हिन्दी पाठ्यक्रम **किये छात्रों के लिए) अवधि -** ०१-०५-२०१३ से ३१-५-२९१३ तक; **आवेदन पत्र जमा करने की अंतिम तिथि -** ०१-०४-२०१३;

९० दिवसीय पाठ्यक्रमः पालि-अंग्रेजी; अवधि - ०१-०७-२०१३ से ३०-९-२९१३ तक; आवेदन पत्र जमा करने की अंतिम तिथि - १५-५-२०१३; **सब के लिए कंप्यूटर पर आवेदन पत्र --** www.vridhamma.org से भी भेज सकते हैं. **संपर्कः** विपश्यना विशोधन विन्यास (V. R. I.), ग्लोबल विपश्यना पगोडा, एस्सेल वर्ड के पास, बोरीवली (पश्चिम), मुंबई - ४०००९१.

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें– डॉ शारदा संघवी – फोनः (०२२-२३०९५४१३) ०९२२३४६२८०५, **ईमेलः s_sanghvi@hotmail.com;** २) श्रीमती बलजीत लाम्बा : फोनः ०९८३३५१८९७९; ३) अलका वेंगुर्लेकरः मोबाईल – ०९८२०५८३४४०.

Registered No. NSK/235/2012-2014

WPP Postal License No. AR/Techno/WPP-05/2012-2014

नये उत्तरदायित्त्व

वरिष्ठ सहायक आचार्य

१. डॉ. शंकरराव देवरे, धुले
२. श्री शरनजीत सिंह कँवर, कपूरथला
३. श्री प्रेमचंद सुंगर, जालंधर
४. श्री नरेंद्र भरवाडा, सूरत
५-६. श्री मारियो एम. एवं श्रीमती मुरील डिसूजा, गोवा
७. श्रीमती आशा मेश्राम, मुंबई
८. श्री प्रभुदयाल सोनगारा, जोधपुर

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

१. श्री रेगजेन देवा नेगी, टेंसिल पूह (हि.प्र.)
२. श्री रुद्र यादगिरि, कच्छ
३. श्रीमती कुसुम शाह, कच्छ
४. श्री रमेश कापड़िया, मुंबई

बालशिविर शिक्षक

१. श्री मृणाल देसाई, अहमदाबाद
२. श्री प्रबोध पटेल, अहमदाबाद
३. श्री कांति पटेल, अहमदाबाद
४. श्रीमती बेला बविशी, पालनपुर
५. कु. नर्वदा परमार, पालनपुर
६. श्रीमती कांता सोलंकी, पालनपुर
७. श्रीमती अफसाना मंसूरी, कच्छ
८. श्रीमती कुंवरबेन कांगड, कच्छ
९. श्री अरुण गावंडे, कच्छ
१०. श्री गोविंदभाई पटेल, कच्छ
११. श्री रणछोड राठोर, रतलाम
१२. श्री सदाचंद तनवानी, रतलाम
१३. श्री हरीश नारनवरे, पुणे
१४. श्रीमती मीनाक्षी राजावत, पुणे
१५. श्रीमती डी. सरस्वथी, बंगलूरू
१६. कु. राजलक्ष्मी कामथ, बंगलूरू
१७. श्री लक्ष्मण नारायण स्वामी, बंगलूरू
१८. श्री पूर्णेश गुप्ता, बंगलूरू
१९. श्रीमती श्रुति बलदेव, बंगलूरू
20. Mrs. Maryam Nayeri Iran

पूज्य गुरुदेव एवं माताजी की म्यंमा यात्रा

आगामी २१ दिसंबर को पूज्य गुरुदेव एवं माताजी अपनी जन्मभूमि और धर्मभूमि म्यंमा जा रहे हैं। इस प्रकार वहां के धर्मपुत्रों-धर्मपुत्रियों, अनेक पूर्व परिचितों तथा मित्रों से भेंट होगी, श्वेडगोन पगोडा में सामूहिक साधना होगी और पूज्य गुरुदेव के कुछ धर्म-प्रवचन भी होंगे।

शरद पूर्णिमा के उपलक्ष्य में पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में एक दिवसीय महाशिविर

२८ अक्टूबर, २०१२, **रविवार, समयः** प्रातः ११ बजे से अपराह्न ४ बजे तक, **'ग्लोबल विपश्यना पगोडा'** के बड़े धम्मकक्ष (डोम) में। कृपया ध्यान दें कि इस विशाल शिविर में आपको किसी प्रकार की असुविधा न हो, इसलिए **बिना बुकिंग कराये न आएं। बुकिंग संपर्क : मो.** 09892855692, 09892855945, **फोन नं.:** 022-28451170, 33747543, 33747544, **(फोन बुकिंग :** प्रातः ११ से सायं ५ तक, प्रतिदिन) **ईमेल Registration:** oneday@globalpagoda.org; **Online Registration:** www.vridhamma.org

दोहे धर्म के

कर्मकांड में उलझ कर, भूला चित्त विराग।
घास फूस संग्रह किया, तत्त्व सार को त्याग॥

पाप छा गया शीश पर, लिए धरम की आड़।
मत बिगाड़ निज लोक को, मत परलोक बिगाड़॥

मल मल धोय शरीर को, मन ना धोए छैल।
न्हाये गंगा गोमती, रहे बैल का बैल॥

जागे गंगा धर्म की, पाप उखड़ता जाय।
निर्मल निर्मल चित्त में, प्यार उमड़ता जाय॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा०) लिमिटेड
८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

गंगा न्हायो गोमती, तीरथ फिर्‌यो तमाम।
सील धरम धार्‌यो नहीं, खोजै मुक्ती धाम॥

दया बणाल्यां द्वेस नै, करुणा करल्यां क्रोध।
राग बदळल्यां त्याग स्यूं, तो ही चित्त विसोध॥

किसन कह्यो, ईसा कह्यो, महावीर कै बुद्ध।
बोधि वचन धारण करां, करल्यां चित्त विसुद्ध॥

नैण-नक्स रै रूप स्यूं, आर्य हुयो ना कोय।
अंतरमन निरमळ हुयो, आर्य कहीजै सोय॥

कूड़-कपट जाणै नहीं, क्रोध न फटकै पास।
उण मिनखां रै अंग मँह, करै देवता वास॥

एक साधक
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक: राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-422 403, दूरभाष : (02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, 69- बी रोड, सातपुर, नाशिक-422 007. **बुद्धवर्ष 2556, भाद्रपद पूर्णिमा, 30 सितंबर, 2012**

वार्षिक शुल्क रु. **30/-,** US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. **500/-,** US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं. 19156/71. Registered No. NSK/235/2012-2014**

WPP Postal Licence No. AR/Techno/WPP-05/2012-2014
Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422 403,** Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422 403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086, 243712, 243238. **फैक्स :** (02553) 244176
Email: info@giri.dhamma.org
Website: www.vridhamma.org